International Journal of Applied Research 2020; 6(5): 389-391

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(5): 389-391
www.allresearchjournal.com
Received: 21-02-2020
Accepted: 24-03-2020

Dr. Vishal Kumar Sharma
Assistant Professor, History, Hindu College, Sonipat, Haryana, India

Corresponding Author:
Dr. Vishal Kumar Sharma
Assistant Professor, History, Hindu College, Sonipat, Haryana, India

वीरवर भगत सिंह का क्रान्तिकारी दर्शन

Dr. Vishal Kumar Sharma

भगत सिंह और उनके क्रान्तिकारी साथियों ने पहली बार क्रान्तिकारियों समक्ष एक क्रान्तिकारी दर्शन रखा। उन्हें कि क्रान्ति का लक्ष्य क्या होना चाहिए। वैसे भी 'एच.आर.ए.' (हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन) के भीतर अरसे से इन मुद्दों पर पुनर्विचार चल रहा था। 1925 में इसके घोषणा में कहा गया था कि एच.आर.ए. का उद्देश्य उन तमाम व्यवस्थाओं का उन्मूलन करना है, जिनके तहत एक व्यक्ति दूसरे का शोषण करता था। अक्तूबर 1924 में इसकी संस्थापक परिषद् ने जनता को सामाजिक क्रान्तिकारी और साम्यवादी सिद्धान्तों की शिक्षा देने, उनका प्रचार–प्रसार करने का निर्णय किया था।

क्रान्तिकारी अजीत सिंह के भतीजे भगत सिंह (जन्म 1907) असाधारण बुद्धिजीवी थे। अपने समय के ढ़ेर सारे राजनीतिक नेताओं की तुलना में कहीं ज्यादा पढ़े–लिखे थे, बहुत गंभीर अध्ययन था उनका। द्वारकादास पुस्तकालय (लाहौर) में समाजवाद, सोवियत संघ और क्रान्तिकारी आन्दोलन (विशेषकर रूस, आयरलैण्ड और इटली) से संबद्ध किताबों का उन्होनें कई अध्ययन केन्द्र (स्टडी सर्कल) स्थापित किए थे और राजनीतिक विषयों पर जोरदार बहस का सिलसिला शुरू किया था। जब एच.एस.आर.ए. का दफ्तर चला गया वहां भी भगत सिंह ने तुरन्त एक पुस्तकालय की स्थापना की और सहयोगियों में समाजवाद व क्रान्तिकारी विचारधाराओं का अध्ययन करने व उन पर बहस चलाने की सलाह दी। उनके कमीज की जेबों में किताबें भरी रहती थी, जिन्हें वह बराबर अपने कामरेड दोस्तों को पढ़ने के लिए दिया करते थे। गिरफ्तार होने के बाद उन्होनें जेल को पुस्तकालय बना दिया। क्रान्तिकारी लक्ष्य प्राप्त करने में दर्शन या विचारधारा की भूमिका कितनी महत्त्वपूर्ण होती है, इस बात को जनता तक पँहुचाने के लिए भगत सिंह ने लाहौर कोर्ट के सामने कहा था, ''क्रान्ति की तलवार में धार वैचारिक पत्थर पर रगड़ने से ही आती है।''

गहन अध्ययन और गंभीर चिन्तन के इस माहौल ने एच.आर.ए. के तमाम लोगों को प्रभावित किया। सुखदेव, भगवतीचरण वोहरा, शिव वर्मा, विजय सिन्हा, यशपाल सभी काफी पढ़े–लिखे और बुद्धिजीवी थे। चन्द्रशेखर आजाद भी, जिन्हें अंग्रेजी का बहुत कम ज्ञान था, तब तक किसी विचार या विचारधारा को ग्रहण नहीं करते थे जब तक उसे पूरी तरह समझ नहीं लेते थे।

क्रान्तिकारियों ने जनता को अपनी विचारधारा से अवगत कराने के लिए जो बयान या 'द फिलॉसफी ऑफ द बॉम्ब' (बम्ब का दर्शन) शीर्षक से जारी किया था, उसे आजाद के कहने पर भगवतीचरण वोहरा ने तैयार किया था। लिखने से पहले हर मुद्दे पर आजाद से चर्चा हुई थी। व्यक्तिगत बहादुरी कार्यवाईयों और आतंकवाद से भगत सिंह का विश्वास गिरफ्तारी से पहले ही उठ गया था, वह मार्क्सवादी हो चले थे और इस बात में विश्वास करने लगे थे कि व्यापक जनांदोलन से ही क्रांति लाई जा सकती है। दूसरे शब्दों में 'जनता ही जनता के लिए' क्रांति कर सकती है।

इसी उद्देश्य से भगत सिंह 1926 में पंजाब में क्रान्तिकारी के खुले संगठन 'भारत नौजवान सभा' के गठन में काफी मदद की, प्रमुख भूमिका निभाई। इस संगठन के वह संस्थापक महामंत्री थे। भारत नौजवान सभा का काम युवकों, किसानों और मजदूरों के बीच खुल कर राजनीतिक कार्य करना था। उन्हें संगठित करना था। गांवों में इसकी शाखाएं खोली जानी थी। संगठन के तत्वाधान में भगत सिंह और सुखदेव ने छात्रों के बीच खुले तौर पर काम करने के लिए 'लाहौर छात्र संघ' का गठन किया।

1929 से 1931 के दौरान अदालत के बाहर भगत सिंह और उनके क्रान्तिकारी साथियों ने जो बयान दिए, उनका सार यह है कि क्रान्ति का अर्थ है क्रान्ति द्वारा बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में समाज के शोषित, दलित व गरीब तबकों के जनांदोलन का विकास। फाँसी पर चढ़ने से कुछ समय पहले 1931 में भगत सिंह ने कहा था, ''किसानों और मजदूरों को संगठित करना अब मुख्य कार्य होना चाहिए।''

लेकिन सवाल यह उठता है कि तब फिर भगत सिंह और उनके क्रान्तिकारी साथी व्यक्तिगत आतंकवादी कारवाईयां क्यों करते थे? इसका एक कारण था

कि उनके विचारों में लगातार तेजी से बदलाव। अतीत उनके वर्तमान का एक हिस्सा था। जो चीज ख्यालों में हासिल हो सकती थी, उसे वे कुछ ही सालों में हासिल करना चाहते थे। इसके अलावा किसी नई विचारधारा का प्रभावी ढ़ंग से जनता के बीच में पैठ बनाना आनन–फानन में नहीं होता। यह कोई घटना नहीं है, जो कभी भी हो सकती हो। यह कोई धर्म परिवर्तन नहीं है, यह एक लम्बी एतिहासिक प्रक्रिया है। दूसरी बात, ये लोग इस पुरानी उलझन में फँसे थे कि कार्यकर्ता कहाँ से आऐंगें, कहाँ से आऐंगें ऐसे सैकड़ों लोग, जो घर–बार छोड़ कर जनता के बीच पूरे समय के लिए काम कर सकें? इनका चयन कैसे किया जाए? उन्हें लगता था कि उनकी धीमी बौद्धिक और राजनीतिक गतिविधियाँ तो कांग्रेस की तुलना में अपने को ज्यादा तेज करना चाहते थे, इसके लिए उनके पास विकल्प क्या था? उन्हें लगा कि बलिदान देकर ही युवकों को जागरूक किया जा सकता है। उनका मानना था कि कुछ चमत्कारिक एवं बहादुरी की कारवाईयों, उनके प्रचार तथा अदालतों में अपने बयानों के माध्यम से राजनीतिक विचारधारा और कार्यक्रमों के प्रचार से ही जन–क्रान्तिकारी दल के लिए कार्यकर्त्ता तैयार किए जा सकेंगें।

अंतिम समय में ये लोग जेल में बंद अपने कामरेडों के साहसी बलिदान के गौरव को बनाए रखने, उनकी छवि को धूमिल न होने देने के लिए ही मुख्य रूप से संघर्ष कर रहे थे। भगत सिंह ने युवकों से अपील की थी क्रान्तिकारी आंतकवाद का रास्ता छोड़ दें, पर इस बात का ख्याल रखें कि इससे बलिदानी साहस पर आँच न आए। आज नही तो कल राजनीति को सही रास्ता पकड़ना ही था, पर यदि एक बार बलिदानी साहस निरूत्साहित हो जाता, तो फिर इसे जगाना बड़ा मुश्किल होता।

भगत सिंह और उनके साथियों ने क्रांति को व्यापक ढ़ंग से परिभाषित किया। अब क्रांति का अर्थ हिंसा या लड़ाकूपन ही नहीं था, इसका पहला उद्देश्य था राष्ट्रीय मुक्ति यानि साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकना और उसके बाद समाजवादी समाज यानि एक ऐसे समाज की स्थापना, जहाँ व्यक्ति द्वारा व्यक्ति का शोषण न हो। 'द फिलासॉफी ऑफ द बम्ब' में क्रांति को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्वाधीनता के रूप में परिभाषित किया गया था। इसका अर्थ था एक ऐसे समाज की स्थापना, जहाँ राजनीतिक और आर्थिक शोषण की कोई भी गुंजाइश न हो। 'एसेंबली बम कांड' में भगत सिंह ने अदालत में कहा था, ''क्रांति के लिए रक्त रंजित संघर्ष जरूरी नहीं है, व्यक्तिगत बैर के लिए भी इसमें कोई जगह नहीं है। यह बम और पिस्तौल की उपासना नहीं है। क्रांति से हमारा तात्पर्य यह है कि अन्याय पर आधारित मौजूदा व्यवस्था समाप्त होनी चाहिए।'' जेल से एक पत्र में उन्होनें लिखा था, ''किसानों को सिर्फ विदेशी शोषकों से ही मुक्ति नहीं पानी है बल्कि उन्हें जमींदारों और पूँजीपतियों के चंगुल से भी आजाद होना है।'' 3 मार्च 1931 के अपने अंतिम संदेश में उन्होनें घोषणा की थी कि भारत में संघर्ष तब तक चलता रहेगा जब तक मुट्ठी भर शोषक अपने लाभ के लिए आम जनता के श्रम का शोषण करते रहेंगे। इसका कोई खास महत्त्व नहीं कि शोषक अंग्रेज पूँजीपति है या अंग्रेज और भारतीयों का गठबंधन है या पूरी तरह भारतीय है। भगत सिंह ने समाजवाद को वैज्ञानिक ढ़ंग से परिभाषित किया जिसका अर्थ था पूँजीवाद और वर्ग–प्रभुत्व का पूरी तरह खात्मा। मार्क्सवाद और समाज के बारे में मार्क्स की वर्गीय धारणा में उनका पूरा विश्वास था। वह अपने आप को भारत में समाजवाद का प्रचारक–संदेशवाहक मानते थे।

राजनीति के दो क्षेत्रों के भगत सिंह ने महान प्रवर्तक की भूमिका निभाई। एक जागरूक, धर्मनिरपेक्ष क्रान्तिकारी होने के नाते वह राष्ट्र और राष्ट्रीय आन्दोलन के सम्मुख मौजुद सांप्रदायिकता के खतरे को पहचानते थे। अपने साथियों, श्रोताओं से वह बराबर कहा करते थे कि सांप्रदायिकता उतनी ही खतरनाक है जितना कि उपनिवेशवाद। 1924 में जब लाला लाजपतराय ने सांप्रदायिक राजनीति का रास्ता अख्तियार किया, तो भगत सिंह काफी तिलमिलाए और लाला लाजपतराय के खिलाफ राजनीतिक–वैचारिक आन्दोलन छेड़ दिया। लेकिन लाजपतराय एक जाने–माने नेता थे, उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। इसलिए भगत सिंह कभी सार्वजनिक रूप से उनकी अवहेलना नहीं करते थे। नौजवान भारत सभा के छः नियमों में से (जिन्हें भगत सिंह ने ही तैयार किया था) दो इस तरह थे– ''ऐसी किसी संस्था, संगठन या पार्टी से किसी तरह का संपर्क न रखना जो सांप्रदायिकता का प्रचार करती हो'' और ''धर्म को व्यक्ति का निजी मामला मानते हुए जनता के बीच एक–दूसरे के प्रति सहनशीलता की भावना पैदा करना और इस पर दृढ़ता से काम करना।''

भगत सिंह धर्म और अंधविश्वास की जकड़न से जनता को मुक्त करने पर बहुत जोर देते थे। अपनी मौत से कुछ हफ्ते पहले उन्होनें लिखा था, ''मैं नास्तिक क्यों हूँ।'' इसमें उन्होनें धर्म और धर्मदर्शन की खूब आलोचना की थी। नास्तिकता का रास्ता उन्होनें खुद तलाशा। इसमें उन्होनें बताया कि कैसे सिख धर्म में उनकी आस्था खत्म हो गई और अंत में भगवान के अस्तित्व में भी उनकी आस्था नहीं रही। उन्ही के शब्दों में, ''प्रगति के लिए संघर्षशील किसी भी व्यक्ति को अंधविश्वासों की आलोचना करनी ही होगी और पुरातनपंथी विचारों को चुनौती देनी ही होगी। प्रचलित विश्वासों की हर एक कड़ी की प्रासंगिकता और सत्यता को परखना ही होगा।

भगत सिंह और बी.के. दत्त पर बम कांड में मुकदमा चला। बाद में भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू और अन्य क्रान्तिकारियों पर अनेक षडयंत्रों में शामिल होने के आरोप में मुकदमा चला। युवा क्रान्तिकारी अदालत में जो बयान देते, वे अगले दिन अखबारों में छपते। पूरे देश में उनका प्रचार होता। अपने सिद्धान्तों के प्रति प्रतिबद्ध, निडर एवं दुस्साहसी ये युवा क्रान्तिकारी रोज अदालत में 'इन्कलाब जिन्दाबाद' का नारा लगाते हुए प्रवेश करते। 'साम्राज्यवाद मुर्दाबाद', 'सर्वहारा जिन्दाबाद' के नारे अदालत में गूँजते। ये युवा क्रान्तिकारी गाते थे– ''सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है'' और ''मेरा रंग दे बसंती चोला''। बेड़ियों में जकड़े इन युवा बलिदानियों के ये नारे और गीत जनता को झकझोर गए। अहिंसक आन्दोलन में विश्वास रखने वाले भी अब इन क्रान्तिकारियों के प्रति रखने लगे। भगत सिंह का नाम हर जुबान पर आ गया। मार्च 1931 में भगत सिंह की फाँसी की खबर सुनकर पूरा देश स्तब्ध हो गया। हजारों आँखें बहुत रोई, घरों में चूल्हा नहीं जला, बच्चे स्कूल नहीं गए। दूर–दराज के गाँवों को भी उदासी डस गई थी।

जेल में क्रान्तिकारियों के लंबे अनशन से भी भारतीय जनता बहुत क्षुब्ध और उद्वेलित हुई। ये क्रान्तिकारी जेल की अमानवीय दशाओं में सुधार के लिए अनशन कर रहे थे। इन लोगों की यह माँग थी कि उन्हें राजनीतिक बंदी माना जाए, अपराधी नहीं। इन हड़ताली क्रान्तिकारी बंदियों के साथ पूरे देश में इनके प्रति समर्थन की लहर आ गई थी। अनशन के 64वें दिन 13 सितम्बर को जतिनदास की मृत्यु हो गई। मौत की खबर सुनकर पूरा देश रोया। उनका शरीर एक ट्रेन द्वारा लौहार से कलकत्ता लाया गया। हर स्टेशन पर हजारों लोग इस महान नेता को अपनी श्रद्धांजली देने के लिए इक्ट्ठे हुए थे। कलकत्ता में उनके पार्थिव शरीर के अंतिम दर्शन के लिए छः लाख लोगों की भीड़ जमा हुई। दो मील लंबी शवयात्रा में तिल धरने की जगह नहीं थी।

लाहौर षडयंत्र व ऐसे कई अन्य मामलों में अनेक क्रान्तिकारियों को लंबी सजाएँ हुई। अनेक लोगों को अंडमान भेज दिया गया। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को फाँसी की सजा सुनाई गई और 23 मार्च, 1931 को फाँसी के तख्ते पर ये नौजवान क्रान्तिकारी गीत गा रहे थे।

दिल से निकलेगी न मर कर भी वतन की उल्फत,
मेरी मिट्टी से भी खुशबु–ए–वतन आएगी।

संदर्भ

1. तातेड़, साहेब राज: भारतीय नव जागरण एवं राष्ट्रीय आन्दोलन, प्रथम भाग, खण्डेलवाल पब्लिशर्स एन्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपूर, 2014
2. ओमानन्द, सरस्वतीः देशभक्तों के बलिदान, हरियाणा साहित्य संस्थान, रोहतक, हरियाणा, 2000
3. जैन, कैलाश चन्दः भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन, द्वितीय भाग, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1999
4. उपाध्याय, विश्वमित्रः विदेशों में भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन, नवयुग पब्लिशर्स, दिल्ली, 1986
5. धवन, एम. एल.ः भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन एवं स्वतंत्रता संघर्ष (1915–1947), भाग–2, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2003
6. उपाध्याय, विश्वमित्रः भारत का मुक्ति संघर्ष और रूसी क्रान्ति, नवयुग पब्लिशर्स, दिल्ली, 1980